ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 139-143
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

महाकवि भवभूति द्वारा वर्णित प्रेम विषयक अवधारणा

डॉ0 बन्दना सिंह

एसोशिएट प्रोफेसर–संस्कृत विभाग, श्री जयनारायण मिश्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0), भारत

Received-05.05.2023, Revised-10.05.2023, Accepted-14.05.2023 E-mail: jagdeepdiwakar@gmail.com

सारांशः *महाकवि भवभूति संस्कृत नाटक एवं काव्य साहित्य के नक्षत्र मण्डल में देदीप्यमान नक्षत्र की तरह विराजमान हैं। नाटककार के रूप में भवभूति का परिचय महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित इन तीन कृतियों द्वारा मिलता है। भवभूति ने भावपूर्ण ह्रदय की गहन एवं सच्ची अनुभूति की अभिव्यक्ति सरल शब्दों में की है। भावपक्ष के कवि भवभूति ने अपने रूपकों में 'प्रेम' तत्व का विस्तृत विवेचन किया है। मानव जीवन में 'प्रेम' का अत्यधिक महत्व है। यह बहुत ही व्यापक है इसके बिना जीवन का सम्पूर्ण व्यापार अधूरा रह जाता है। प्रेम ही मानव को एक–दूसरे से जोड़ता है तथा ईश्वर से मिलाता है। यह प्रेम अनुभवसिद्ध होता है। भवभूति ने प्रेम के अलग–अलग स्वरूपों पर विस्तृत प्रकाश डाला है, जिसमें सन्तति प्रेम, दाम्पत्य प्रेम और प्रकृति प्रेम आदि मुख्य हैं। दाम्पत्य प्रेम के उदाहरणार्थ प्रेम की ज्योति सुख के समीर तथा दुःख की आँधियों में समान रूप से जल रही हैं जिसमें पति पत्नी का स्नेह अद्वैत रूप स्थापित कर देता है–*

अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगुणं सर्वास्वस्थासु यद्
विश्रामो ह्रदयस्य यन्ना जरसा यास्मिन्नहार्यो रसः ।
कालेनावरणात्ययात् परिणते यत्स्नेहसारे स्थित,
भद्रं तस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं हि तत्प्राप्येते।।

कुंजीभूत शब्द– काव्य साहित्य, नक्षत्र मण्डल, देदीप्यमान नक्षत्र, विराजमान, नाटककार, महावीरचरित, अभिव्यक्ति, मानव जीवन।

महाकवि भवभूति ने अपने रूपकों में जिस सात्विक और आदर्श प्रेम का स्वरूप वर्णित किया है उसी का विवेचन प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है। महाकवि भवभूति संस्कृत जगत के मूर्धन्य नाटककार है। इन्होंने 'एको रसः करुण एव' कहकर करुण रस को ही नाटक का अंगीरस माना है। इनके द्वारा रचित नाटकों में उत्तररामचरित का विशिष्ट स्थान है। कहा भी गया है– ''उत्तरेरामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते''। भावपक्ष के कवि भवभूति ने अपने नाटकों में 'प्रेमतत्व' का विस्तृत विवेचन किया है।

मनुश्य जीवन में 'प्रेम' शब्द का बहुत अधिक महत्व है। प्रेम शब्द बहुत व्यापक है जिसके बिना जीवन का समग्र सम्पूर्ण व्यापार अधूरा रह जाता है। मनुष्य के साथ ही साथ पशु–पक्षी आदि भी प्रेम पाने का आतुर रहते हैं। भगवद्भक्ति हो या मानव का सामान्य व्यवहार सर्वत्र प्रेम का ही संसार रहता है। प्रेम शब्द के अनेक पर्याय हो सकते हैं जैसे आराधना, श्रद्धा, लगाव, अनुराग–आसक्ति, समर्पण आदि, परन्तु सच्चा प्रेम वहीं होता है, जो निःस्वार्थ हो सकारात्मक हो, भेदभाव से रहित हो। प्रेम ही मानव को एक दूसरे से जोड़ता है। महान् सन्त कबीरदास ने प्रेम की व्यापकता को दर्शाते हुए कहा है–

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ पडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम' का पढ़े सो पण्डित होय।।

संस्कृत साहित्य में प्रेम तत्व का बहुत ही विस्तृत विवेचन किया गया है। लेकिन उत्तररामचरित में प्रेम के विराट स्वरूप और असीम क्षेत्र का परिचय दिया है। जो मानवीय संवेदनाओं का मूलाधार होता है।

सन्तति प्रेम – महाकवि भवभूति ने राम का लव के प्रति अचानक उमड़ते स्नेह का अनुभव करते हुए कहते हैं–

व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोडपि हेतु–
र्न खलु बहिरुपाधीन्प्रीतयः संश्रयन्ते।
विकसति हि पतधैस्योदये पुण्डरीक
द्रवति च हिमरश्मा वुद्गते चन्द्रकान्तः।।[1]

अर्थात् कोई आन्तरिक कारण ही पदार्थों को परस्पर संसक्त करता है। प्रीतियां निश्चय ही बाह्य हेतुओं का आश्रयण नहीं रखती है। कमल सूर्य के ही उदित होने पर द्रवित होता है। इस श्लोक से महाकवि भवभूति के प्रेमविषयक सिद्धान्त पर प्रकाश पड़ता है। भवभूति प्रेम को वाह्य कारणों पर आश्रित नहीं मानते। इस प्रेम का कारण कुछ नहीं होता है। ''स्नेहश्च निमित्त सत्यपेक्षश्च इति विप्रतिसिद्धमेतत्।'' प्रेम तो अकारण स्वप्रेरित और अनिर्वाच्य होता है। प्रेम का रहस्य तो केवल ह्रदय ही जानता है– 'ह्रदयं त्वेव जानाति प्रीतियोगं परस्परम्'' वाह्य कारणों पर आश्रित प्रेम कभी स्थायी नहीं होता है, जैसा कि वर्तमान में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा रहा है। लव को देखते ही राम के ह्रदय में सहसा जो प्रेम अंकुरित हुआ उसके मूल में भी पिता पुत्र सम्बन्ध रूप अज्ञात आन्तरिक कारण ही निश्चित था।

सन्तति के साथ प्रेम का वास्तविक रूप भवभूति की दृष्टि में अति उच्च है। माता–पिता के लिए सन्तति क्या है? अर्थात् कितना महत्वपूर्ण है इसका वर्णन करते हुए भवभूति कहते हैं–

अन्तः करणतत्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।
आनन्द ग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति बध्यते।।[2]

दम्पत्ति के स्नेह का आश्रय होने के कारण उनके अन्तःकरणरूपी तत्व की 'अपत्य' इस प्रकार की अनुपम गाँठ (ईश्वर के द्वारा) बाँधी जाती है। सन्तान ही पति–पत्नी के स्नेहासक्ति ह्रदयों को एक सूत्र में बाँधने वाली आनन्दमयी ग्रन्थि है। पति और पत्नी का वात्सल्य

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

अपत्य में केन्द्रित रहता है। अतः सन्तान उनके स्नेह का आश्रय होता है। उनका वह स्नेह सर्वदा वासना से अकलुषित रहता है। इस प्रकार पति–पत्नी का हृदय सन्तान से बँधा हुआ नित्य अलौकिक आनन्द का अनुभव करता है।

महाकवि भवभूति ने अपत्य (सन्तान) की भारतीय संस्कृति के अनुरूप वह परिभाषा प्रस्तुत की है, जिससे कवि उनकी अपत्य विषयक उच्च एवं पवित्र भावना अभिव्यक्त हो रही है। "न पतति वंशो येनेत्यपत्यम्' इस व्युत्पत्ति के अनुसार, अपत्य वैसी उच्च एवं पवित्र भावना का विषय होने का अधिकार भी रखता है।

अपनी सन्तति के दूर जाने का शोक कितना गहरा होता है, इसकी कल्पना महाराज जनक के उदाहरण से देखा जा सकता है। सीता के निर्वासन का वृत्तान्त सुनकर वे वैखानस बन कर तप करने लगे, फिर भी सीता के वियोग–जनित व्यथा से उनकी मुक्ति नहीं है–

हृदि नित्यानुषक्तेन सीता शोकेन तप्यते ।
अन्तः प्रसृप्तदहनो जरन्निव वनस्पतिः ।।[3]

इस प्रकार प्रेम की चरम परिणति सन्तान सुख है। भवभूति ने सन्तान को पति–पत्नी के आन्तरिक प्रेम का एक सूत्र मानते हैं। उस प्रेम को बाँधने के लिए यह एक आनन्द रूप ग्रन्थि है।

दाम्पत्य प्रेम– पति–पत्नी का प्रेम इस प्रसंग में सर्वोपरि है। दाम्पत्य प्रेम वह है जहाँ पति–पत्नी एक दूसरे के प्रिय मित्र एवं सच्चे बन्धु होते हैं। दोनों की भावनाएँ, समृद्धि एवं जीवन एक दूसरे के लिए होता है। इस प्रकार आदर्श दाम्पत्य प्रेम में पुरुष का अपना सब कुछ स्त्री का होता है और स्त्री का सर्वस्व पुरुष का होता है। दोनों ही एक–दूसरे के पूरक और सहायक होते हैं। पति–पत्नी के आदर्श सम्बन्ध का सुन्दर वर्णन मालतीमाधव में द्रष्टव्य है–

प्रेयो मित्रां बन्धुता वा समग्रा सर्वे कामाः शेवधिजीवितं वा ।
स्त्रीणां भर्ता धर्म दाराश्च पुंसामित्यन्योन्यंवत्सयोर्ज्ञातमस्तु ।।[4]

वत्स, तुम्हें यह अच्छी प्रकार जान लेना चाहिए कि स्त्री के लिए उसका पति और पति के लिए उसकी विवाहिता पत्नी दोनों एक दूसरे के लिए परम प्रिय मित्र है। यही सबसे बड़ा सम्बन्ध है, समस्त इच्छाओं की पूर्णता है, सबसे बड़ी निधि है, अधिक क्या कहें, स्वयं जीवन ही है। प्रेम का प्रभाव माधव के लिए वर्णनातीत है–

परिच्छेदातीतः सकलवचनानामविषयः,
पुनर्जन्मन्यस्मिन्ननुभवपथं यो न गतवान्
विवेक प्रध्वंसादुपचित महामोहगहनो विकारः
कोऽप्यन्तंजडयति च तापं च कुहते।।[5]

प्रेम एक ऐसा मनोविकार है, जिसकी व्याख्या असंभव है, जिसके विषय में शब्दों में कुछ कहा नहीं जा सकता। जिसे मैंने इस जन्म में पहले कभी अनुभव नहीं किया, जिसने मेरे विवेक को हर लिया है तथा जिसने मुझे महामोहान्धकार से ढक लिया है। मेरे अन्तःकरण को जड़ीभूत कर रहा है और संतप्त भी कर रहा है।

महाकवि भवभूति के अनुसार प्रेम की ज्योति सुख के समीर तथा दुःख की आँधियों में समान रूप से जल रही है तथा पति–पत्नी का स्नेह अद्वैत रूप स्थापित कर देता है–

अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगुणं सर्वास्वस्थासु यद्
विश्रामो हृदयस्य बच्चा यत्रा जरसा यास्मिन्नहार्यो रसः।
कालेनावरणात्ययात् परिणते यत्स्नेहसारे स्थितं
भद्रं तस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं हि तत्प्राप्येते।।[6]

जो दामपत्य सुख और दुख में एक रूप है, सभी अवस्थाओं में अनुसरण करने वाला है, जिसमें हृदय का विश्राम है, जिसमें वृद्धावस्था के से अनुराग छीना नहीं जा सकता है, जो समय पाकर आवरण के नष्ट हो जाने के कारण अथवा विवाह से मरण पर्यन्त परिपक्व उत्कृष्ट प्रेम में अवस्थित है, उस दाम्पत्य का वह विलक्षण प्रेम बड़े पुण्य से प्राप्त किया जाता है। पवित्र प्रेम के उपासक भवभूति का प्रेम वासना के स्तर से बहुत ही उच्चकोटि का है। इस श्लोक के सम्बन्ध में प्रो० काले का मत है–

What a grand ideal of Conjugal love- The Poet gives as hearer! Ram's words are not an effusion of youthful passion untried or experienced but passion tempered downy by experience and long association get is impossible to describe a husbands love and regard for his wife more effectively then the Poet has done here.

राम पत्नी को गृहशोभा के रूप में देखते हैं। कल्याणकारी 'पवित्र' दाम्पत्य प्रेम की प्राप्ति बड़ें भाग्य से ही किसी को होती है। अपने इसी उदात्त एवं निःस्वार्थ प्रेमभाव को व्याख्या करते हुए भवभूति कहते हैं कि प्रिय चाहे प्रेमी के लिए कुछ भी न करें, केवल उसकी उपस्थिति ही प्रेमी के लिए अमूल्य निधि है। प्रिय के सानिध्य मात्र से प्रेमी का सारा दुःख दूर हो जाता है, अर्थात जो जिससे स्नेह करता है वह उसके लिए सर्वस्व है। इस प्रसंग में पत्नी का स्नेह अनिर्वचनीय है। राम ने सीता के प्रेम के विषय में कहा है–

न किञ्चिदपि कुर्वाणः सौख्यैर्दुःखान्यपोहति ।
तत्तस्य किमपि द्रव्यं यो हि यस्यप्रियो जनः।।[7]

इसीलिए कहा गया है– जो जिसका प्रियजन होता है वह उसका अनिर्वचनीय द्रव्य होता है। वह स्वयं कुछ न करता हुआ भी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

अपने सान्निध्य मात्र से उत्पन्न सुखों से दुःखों को समाप्त कर देता है। निश्चय ही प्रियजनों का सानिध्य सुखकर तथा सभी दुःखों को दूर करने वाला होता है। जिस प्रकार पतिव्रता सीता के लिए पति ही सर्वस्व है, उनके अतिरिक्त परपुरुष का चिन्तन स्वप्न में भी नहीं कर सकती हैं उसी प्रकार राम का भी एक पत्नीव्रत सर्वोच्च था–

देव्या शून्यस्य जगतो द्वादशः परिवत्सरः ।
प्रनष्टमिव नामापि न च रामो न जीवति ।।[8]

पति–पत्नी के परस्पर प्रेम में भवभूति का अटूट विश्वास था–

प्रकृत्यैव प्रिया सीता रामस्यासीन्महात्मनः ।
प्रियभावः स तु तथा स्वगुणैरेव वर्धितः ।।
तथैव रामः सीतायाः प्राणेभ्योऽपि प्रियोऽभवत्।
ह्रदयं त्वेव जानाति प्रीतियोगं परस्परम् ।।[9]

भवभूति ने दाम्पत्य जीवन के संयोग एवं वियोग दोनों ही पक्षों का बहुत सुन्दर चित्रण किया है। मालतीमाधव में इसके लिए उन्हें पूर्ण अवसर मिला है। मालती और माधव दोनों की कामावस्था का वर्णन किया गया है, किन्तु संयोग वर्णन के प्रसंग में कवि के द्वारा अमर्यादा का स्पर्श तक नहीं हुआ है। उत्तरामचरितम् में तो यह मर्यादा और भी संयत रूप धारण कर लेती है। जब राम चित्रदर्शन के प्रसंग में जनस्थान के चित्र देखते देखते उन दिनों का स्मरण करने लगते है, जब गोदावरी नदी के तट पर लक्ष्मण द्वारा निर्मित पर्णकुटी में राम और सीता एक दूसरे के कपोल से कपोल सटाये हुए परिरम्भण में आबद्ध होकर प्रेम भरी बातें करते रहते हैं और पता ही नहीं चलता कि रात्रि कब व्यतीत हो गई–

किमपि किमपि मन्दं मन्दमासक्ति योगा।
दविरलितकपोलं जल्पतोरक्रमेण।।
अशिथिलपरिरम्भव्यापृतैकैकदोष्णो,
रविदित गतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्।।[10]

पूर्णसंयोग श्रृंगार का वर्णन होते हुए भी यहाँ वासना का लेशमात्र भी नहीं है। भवभूति दाम्पत्य प्रेम में काम वासना को महत्व नहीं देते। उत्तररामचरितम् में पूर्णगर्भा सीता चित्रवीथी दर्शन के पश्चात् जब थक जाती हैं और राम के भुजाओं का 'सहारा लेकर उनके वक्षस्थल पर सिर रखकर सो जाती हैं। उस समय अपने प्रति सीता के प्रेम और विश्वास को देखकर राम दाम्पत्य जीवन में पत्नी की उपयोगिता बताते हुए कहते हैं–

इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयो,
रसावस्याः स्पर्शो वपुषि बहुलश्चन्दनरसः।
अयं बाहुः कण्ठे शिशिरमसृणो मौक्तिकसरः,
किमस्या न प्रेमो यदि परमसह्यस्तु विरहः।।[11]

'स्त्री ''घर की लक्ष्मी होती है। वह आँखों के लिए अमृत की सलाई होती है। उसका स्पर्श चन्दन रस जैसा शीतल होता है। उसका सर्वस्व प्रिय और सुखद होता है, केवल उसका विरह असह्य होता है। सीता के माध्यम से राम पत्नी के सुखद स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं –

म्लानस्य जीवकुसुमस्य विकासनानि,
सन्तर्पणानि सकलेन्द्रिय मोहनानि ।
एतानि ते सुवचनानि सरोरुहाक्षि,
कर्णामृतानि मनसश्च रसायनानि।।[12]

सीता द्वारा राम को यह कहने पर कि मुझ पर आपका अचल अनुग्रह है, अब इसके अतिरिक्त क्या चाहिए ? इस पर राम कहते हैं–हे कमललोचने। यह तुम्हारे मृदुवचन मुरछाये हुए जीवन पुष्प को विकसित करने वाले कानों के लिए अमृतोपम एवं मन के लिए रसायन है।

राम के दाम्पत्य जीवन की मधुरता की एक झाँकी उत्तररामचरितम् के तीसरे अंक में देखी जा सकती है–

आष्व्योतनं नु हरिचन्दनपल्लवानां
निष्पीडितेन्दुकर कन्दलजो न सेकः।
आतप्तजीवितपुनः परितर्पणोऽयं
संजीवनौषधि रसः नु ह्रदि प्रसिक्तः।[13]

सीता के कर–स्पर्श से राम को अनिर्वचनीय आनन्द की प्राप्ति हुई, जिसके कारण वे अनेक प्रकार. से अनुमान करते है। सचमुच अपने प्रिय का स्पर्श मात्र ही अलौकिक आनन्द देता है, तो दाम्पत्य के रूप में रहने पर आजीवन कितना आनन्द देगा। राम और सीता का दाम्पत्य–भाव आदर्श था। वासन्ती के शब्दों में राम ने सीता के लिए ठीक ही कहा था–

त्वं जीवितं त्वमसि मे ह्रदयं द्वितीयं।
त्वं कौमुदी नयनोरमृतं त्वमङ्गं।।[14]

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

भवभूति संस्कृत के प्रौढ़ और अभिजात नाटककार हैं। उत्तररामचरितम् में राम लोकमत का आदर करके सीता को वन में भेज तो देते है पर चिरसहचरी के वियोग से उनका प्रौढ़ हृदय बिल्कुल बैठ जाता है। वे अन्दर ही अन्दर घुलते हैं–

अनिर्भिन्नो गंभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।।[15]

सीता के वियोग में राम पूर्णतः विपन्न है। वे सीता का स्मरण कर रो उठते हैं। जिसे निम्न श्लोकों के माध्यम से व्यक्त किया गया है–

दलति हृदयं गाढोवेलाद्वेगं तु न भिद्यते।
वहति विकलः कायां मोहं न मुञ्चति चेतनाम्।।
ज्वलयति तनुमन्तर्दाहः करोति न भस्मसात् ।
प्रहरति विधि मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम् ।।[16]

अत्यन्त दुःख से हृदय फट रहा है, पर दो टुकड़ें नहीं हो पाते, विकल शरीर मोहाच्छन्न है, पर चेतना रहित नहीं हो पाता। आन्तरिक ज्वाला जला तो रही है पर राख नहीं बना देती। मर्मच्छेदी विधि प्रहार तो करता है किन्तु जीवन तन्तु को काट नहीं देता। यह ष्लोक मालतीमाधव में भी इसी प्रकार आया है।[17]

भवभूति द्वारा प्रतिपादित दाम्पत्य जीवन का प्रेम वह आदर्श है, जो पाश्चात्य जीवन के लिए एक चुनौती है, जहाँ छोटी–छोटी बातों पर दाम्पत्य जीवन में खटाष आ जाती है और वही खटाष उस दाम्पत्य प्रेम रूपी दूध को फाड़ देता है । भवभूति ने राम के माध्यम से एक सच्चें स्नेही पति का अनूठा चित्र खींच दिया है जिसकी मिसाल विश्व साहित्य में मिलना दुष्कर है।

प्रकृति प्रेम– प्रकृति प्रेम चराचर के साथ महानुभावों का प्रेम दिखना भवभूति के लिए अभीष्ट है। पंचवटी का नाम सुनते ही आत्रेयी को सर्वप्रथम सीता के वृक्षों के साथ बन्धुत्व का स्मरण हो आता है –

स एष ते वल्लभशाखिवर्गः।[18]

राम के प्रेम प्रकृति को संजीवता प्रदान कर रही है। वे पञ्चवटी प्रदेश की इस सजीवता का उपाख्यान करते हैं–

तदत्रैव या पञ्चवटी यत्र चिरनिवासन विविधविश्रम्भातिसाक्षिणः प्रदेशाः प्रियायाः प्रियसखी च वासन्ति नाम वन देवता।

संस्कृत नाटककारों में भवभूति को सम्भवतः प्रकृति से सर्वाधिक प्रेम है। भालती माधव में यद्यपि राज परिवारों का कथानक है किंतु उसमें ही प्रकृति वर्णन सर्वाधिक है। उत्तररामचरित का कथानक राजभवन से आरम्भ होता है किन्तु उसके बाद उसकी प्रत्येक घटना प्र.ति के उन्मुक्त वातावरण में – पंचवटी, वाल्मीकि आश्रम, गंगातट आदि में ही घटित होती हैं। उत्तररामचरित में प्रकृति का मानवीकरण अधिक किया गया है। यहाँ प्रकृति मानव का रूप धारण करके रंगमंच पर आती है और अन्य पात्रों के साथ सुख–दुःख का अनुभव करती हुई उनके साथ सहानुभूति प्रकट करती है। पृथ्वी एवं गंगा सीता के दुःख में उन्हें सहारा देती हैं।

सीता का पशुओं और पक्षियों के साथ प्रेम भी उदात्त है। उन्होंने हाथी के बच्चें को पल्लवी पल्लवाग्र खिलाती थी। एक पालित मोर को नचाया करती थीं। प्रकृति के बीच सीता के प्रेम ने सौहार्द का साम्राज्य बना रखा था। भवभूति के अनुसार प्रकृति ने राम और सीता के लिए एक कुटुम्ब बना रखा था–

येनोद्गच्छद्विसकिसलयस्निग्धदन्ताङकुरेण,
व्याकृष्टस्ते सुतनु ! लवनीपल्लवः कर्णमूलात् ।
सोऽयं पुत्रास्तव मदमुचां वारणानां विजेता,
यत्कल्याणं वयसि तरुणे भाजनं तस्य जातः।।[19]

शम्बूक वध के बाद पञ्चवटी में प्रवेश करते ही राम अपने वनवास के दिनों का जीवन स्मरण करते हुए कहते हैं कि यही तो वह वनप्रदेश है जहाँ पर पशु पक्षी और वृक्ष भी हमारे बन्धु थे–

यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बान्धवों मे,
यानि प्रियासहचरश्चिरमध्यवात्सम्
एतानि तानि बहुनिर्झर कन्दराणि,
गोदावरी परिसरस्य गिरेस्तटानि।।[20]

भवभूति के प्र.ति वर्णन की एक और विशेषता है कि वह प्रकृति के सुरम्य, कोमल एवं मृदुल पक्ष के वर्णन के साथ ही उसके रौद्र, उग्र, कठोर और भयावह पक्ष का भी वर्णन करते हैं। वासन्ती और आत्रेयी को वार्तालाप करते–करते दोपहर हो गया है, उसकी कठोरता का वर्णन करते हुए कवि कहता है–

कण्डूलद्विपगण्डपिण्डकषणोत्कम्पेनसंपातिभिः
धर्मस्रंसितबन्धनैश्च कुसुमैरर्चन्ति गोदावरीम् ।
छायापस्किरभाग विष्किर मुखव्याकृष्ट कीरत्वचः,
कूजतक्लान्त कपोत कुक्कुटकुलाकूलेकुलायदुमाः।।[21]

दिवस की कठोरता एवं भयानकता के अनुरूप ही यहाँ शब्दावली का प्रयोग भी उतना ही कठोर और भयानक है। इसी प्रकार गुफाओं में रहने वाले भालुओं की दहला देने वाली आवाज भी अत्यधिक भयानक होती है। 'घू घु' करते हुए उल्लुओं से युक्त कीचक,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

धूप के कारण निःशब्द काक समूह, क्रौञ्च पर्वत पर मयूरो के शब्दों से भयाक्रान्त सर्पों का चन्दन के वृक्ष में प्रवेश यह भी बहुत ही भयावह वर्णन है–

गुञ्जात्कुञ्ज कुटीर कौशिकघटाघुत्कारवत्कीचक,
स्तम्बाडम्बर मूक मौलिलकुलः क्रौञ्चाभिधोऽयं गिरिः
एतस्मिन् प्रचलाकिनां प्रचलतामुद्वेजिता कूजितं,
रुद्वेल्लन्ति पुराण रोहिणं तरुस्कन्धेषु कुम्भीनसा।।[22]

प्रकृति का प्रेम– व्यापार उसके मानवीकरण के लिए अभिव्यक्त है। राम और सीता के प्रकृति प्रेम ने पशु पक्षियों से जो मैत्रीभाव स्नेह सम्बन्ध के द्वारा स्थापित किया था। उसका पूर्ण निदर्शन भवभूति की रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है।

इस प्रकार स्पष्टरूप से भवभूति ने अपनी रचनाओं में जिस प्रेम विशयक स्वरूप का विवेचन किया है वह अति विशाल व मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में व्याप्त है'तथा प्रत्येक आदर्श प्रेम का स्वरूप स्थापित करता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम उसके मर्म को समझकर अपने आचरण में लायें। प्रेम के इस स्वरूप के आधार पर आध्यात्मिक जीवन में भी मानव उन्नति कर सकता है तथा व्यावहारिक जीवन में भी सफल हो सकता है। प्रेम के विषय में जो भ्रान्तियाँ समाज में व्याप्त हैं, उसके समाधान में भी भवभूति के प्रेम विशयक विवेचन से सहायता मिल सकती है। प्रेम को जब हम वासना से जोड़कर देखते हैं, तब उसका स्वरूप बहुत ही संकुचित हो जाता है तथा हम दिग्भ्रमित हो जाते हैं। हमें प्रेम के सच्चे स्वरूप का ज्ञान तथा अनुभव साहित्य से पढ़कर तथा व्यवहार के माध्यम से जानने का प्रयास करना चाहिए। उसके लिए भवभूति के नाटक आदर्श माने जा सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उत्तर रामचरित 6/12.
2. उ० रा० च० 2.
3. उ० रा० च० 4/2.
4. उ० रा० च0 6/18.
5. मालतीमाधव 6/19.
6. उ० रा० च. 1/39.
7. उ० रा० च० 6/5.
8. उ० रा० च० 3/33.
9. उ० रा० च० 6/32.
10. उ0 रा०च० 1/27.
11. उत्तररामचरितम् 1/38.
12. उ०रा० च0 1/36.
13. उ०रा० च० 3/26.
14. उ० रा० च० 3/31.
15. उ० रा० च० 3/1.
16. उ० रा० च० 3/31.
17. मालतीमाधव 9/32.
18. उ0 रा०च० 2/6.
19. उ0 रा0 च0 3/15.
20. उ0 स० च० 3/8.
21. उ०रा० च० 2/9.
22. उ० रा० चं० 2/29.

*****